Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 5439731

Roll No. 24029000803
Total Mark 50/75.00

Exam MASTER OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A010701T - HINDI KAVYA KA ITIHAS

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	3/5						
1B	3/5						
1C	4/5						
1D	3/5						
1E	4/5						
1F	3/5						
1G	4/5						
1H	3/5						
1I	3/5						
2	9/15						
3	NA/15						
4	NA/15						
5	NA/15						
6	NA/15						
7	NA/15						
8	11/15						
9	NA/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 23-12-2024 Shift: Ist Room No.: 09

Paper Code: A010701T Subject: Hindi kavya ka Itihas Year/Sem: 1st sem

Name of Candidate: Ragini

Roll No.: 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

COE Facsimile

Signature of Invigilator

Signature of Candidate: Ragini

PART-II

Q	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

MARKS OBTAINED

Total Marks in Figures — Max. Marks

Total Marks in Words

Paper Code: A010701T

Signature of Evaluator

PART-III

Course: Master of Arts (Hindi)

Session: 2024-25 Year/Semester: I - sem

Subject Name: Hindi kavya ka Itihas

Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A 0 1 0 7 0 1 T

Exam Date: 2 3 1 2 2 0 2 4

Name of Candidate: RAGINI

Father's Name: VINDHYAKHAL SHARMA

महाविद्यालय का कोड College Code: K N 0 0 9

परीक्षा केंद्र का कोड Exam Centre Code: K N 0 0 9

परीक्षा का प्रकार Type of Exam: संस्थागत Regular ● भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex-Student ○ व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.: 5439731

Paper Code: A010701T

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollement Number: C S J M A 2 4 0 0 0 1 5 9 1 9 0

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

पेपर कोड Paper Code: A 0 1 0 7 0 1 T

Signature of Candidate: Ragini

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. ऑफसर में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken thecircles completely.

Correct Method	Incorrect Method
(1) ● (3) (4)	✓ ⊗ ◉ ④

4. Make no Stray marks o n this sheet.

5.DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्धारित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़ें, मोबाइल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों को दिशा निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशो को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसको परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त शाख नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code

A	D	1	D	7	0	1	T

1

उत्तर सं० - 1 (A)

विद्यापति आदिकालीन कवियों में से सुप्रख्यात कवियों में एक हैं। इनकी भाषा पर अनेक मत हैं इनकी भाषा मुख्यत: तीन प्रकार की रही है। इन्होंने आदिकालीन युग में व्याप्त राजनीतिक धाराओं एवं सांस्कृतिक रीतियों को उल्लंघन करते हुए प्रेम की कविताएं लिखी। विद्यापति की तीन प्रकार रचनाएं लिखी हैं।

(i) अवहट्ठ में लिखित कृतियाँ
(ii) संस्कृत में लिखित कृतियाँ
(iii) मैथिली तथा जनभाषा में लिखी कृतियाँ

विद्यापति की भाषा शैली अत्यन्त सरल भावुक विवेचनापूर्ण एवं तार्किक है। इनकी इनकी भाषा शैली पर विशेष पकड़ थी इन्होंने मुख्यत: काव्य रचनाओं में श्रृंगार को अति महत्वपूर्ण स्थान दिया है साथ ही इनके काव्य में भक्ति धारा भी आलोकित होती है। विद्यापति हिन्दी के एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने श्रृंगार एवं भक्ति दोनों की काव्य रचनाएँ लिखी हैं। तथा दोनों ही अपनी चुनौती को प्राप्त है।

विद्यापति की काव्य शैली पर विद्वानों में मतभेद है कि विद्यापति श्रृंगार के कवि हैं या भक्ति के। यूँ तो विद्यापति ने श्रृंगार व भक्ति दोनों धाराओं में काव्य रचनाएं लिखी हैं किन्तु श्रृंगार पर इनकी पकड़ भक्ति के अपेक्षा अधिक है। तथा बहुत से विद्वानों ने विद्यापति को मैथिल कोकिल की भी संज्ञा दी है।

किन्तु इनकी पदावली तथा कीर्तिलता मैथिली भाषा में लिखी है तथा इनकी रस कृष्णावली, २ विद्यापती पदावली आदि रचनाएं अवधी में हैं।

Do Not Write anything in this Portion

विद्यापति की रचनाओं में श्रृंगार व भक्ति दोनों का ही अपूर्व सामंजस्य मिलता है। इनके श्रृंगार सम्बन्धी रचनाएँ पढ़ें तो लगता है ये श्रृंगार के कवि हैं तथा इनकी भक्ति परक रचनाएं पढ़ो तो लगता है कि ये भक्ति धारा के कवि हैं।

उत्तर सं -1 (B)

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ है पुनः जाग्रत होना अथवा अपने आप को यथार्थ से सम्बद्ध करना पुनर्जागरण प्रमुख इतिहास में प्रचलित है किंतु पुनर्जागरण हिन्दी साहित्य के इतिहास का भी पुनर्जागरण से सम्बद्ध है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के पुनर्जागरण काल को काल विभाजन में भारतेन्दु युग नाम दिया गया जिस काल में जनसाधारण के उपर व्याप्त बुराइयों तथा तथा इनके शोषण से मुक्ति मिली तथा

भारतेन्दु युग में हिन्दी साहित्य में चली आ रही काव्य की पुरानी धाराओं में इस युग उस काव्य के विरुद्ध चली धारा ही पुनर्जागरण की धारा कहलायी तथा इस युग में काव्य में व्याप्त बुराइयों को लेखकों ने परित्याग तथा काव्य में व्याप्त बुराइयों का उन्मूलन किया। इस तरह पुनर्जागरण काल काव्य का भी पुनर्जागरण काल सिद्ध हुआ तथा काव्य के क्षेत्र में नई चेतना का विकास हुआ जिससे कवियों में नई ओज का समावेश हुआ। इस के कवियों ने

Paper Code M 0 1 0 2 0 1 T

समाज में व्याप्त तथा इस समय के समकालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए उस समय के काव्य रचनाएं कि तथा उस समय के समाज का सजीव चित्रण किया तथा इसमें व्याप्त कुरीतियों का भी सजीव चित्रण किया जिससे उस समय के जन साधारण में नई चेतना का विकास हुआ तथा उस काल को जनसाधारण को नई ऊर्जा मिली पुनर्जागरण काल साहित्य का वास्तव में पुनर्जागरण काल था

क्योंकि इस काल के कवियों ने कल्पनाओं को किनारे रखकर यथार्थ का चित्रण किया तथा समाज के यथार्थ स्वरूप को जनसाधारण के सामने लाया।

इसलिए भारतेंदु युग को हिन्दी साहित्य के इतिहास का पुनर्जागरण काल कहा जाता है। इसके प्रमुख कवि है— स्वयं भारतेंदु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट बालमुकुन्द गुप्त, भिखारी दास इत्यादि।

उत्तर सं॰ 1(C)

तुलसीदास हिन्दी साहित्य तथा उसके पूर्व के साहित्य के भी प्रख्यात कवि है। इनका नाम विश्व के श्रेष्ठ कवियों में समाए है। इनकी कृति रामचरितमानस के कारण इन्हे भारत में नही अपितु सम्पूर्ण विश्व में याद किया जाता है। तुलसीदास की भाषा प्रमुखत: अवधी तथा ब्रजभाषा है। किन्तु इनकी कृति रामचरित मानस में उन्होंने एक अलग ही भाषा का प्रयोग किया जिसे जनसाधारण की भाषा नाम भी दिया जा सकता है।

Paper Code A 0 1 0 7 0 1 7

तुलसीदास ने भारत की अनेक स्थानों का भ्रमण किया है इसलिए इन्हें अनेक स्थानों की भाषा का ज्ञान हो गया था। तुलसीदास ने अपने काव्य मे अत्यन्त ही सरल भाषा का प्रयोग किया

जिससे इनके काव्य को पढ़ने समझने में अधिक कठिनाइयों का सामना नही करना पड़ता है, इसके काव्य में अत्यन्त सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।

तुलसीदास में हिन्दी के अनेक कवियों का गर्व बने थे तुलसीदास ने अपने विनय पत्रिका में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है तथा अपने रामचरितमानस मे अवधि भाषा का प्रयोग किया है
इन्होंने अपने काव्य में अनेक भाषाओं का समावेश किया है। इसलिए इन्हें कवि भी कहते है।

इनकी प्रमुख रचनाए निम्न है जिन्हे उन्होंने ब्रजभाषा में लिखी—

(i) विनय पत्रिका (ii) रामलला नहछू
कवितावली पार्वती मंगल
श्री कृष्ण दोहावली जानकी मंगल

इनकी अवधि में लिखी रचनाएँ—

(i) रामचरितमानस, (ii) हनुमानचरित
(iii) दोहावली,
(iv) गीतावली,
(v) रामाज्ञा प्रश्न,

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

उत्तर सं० – 1 (D)

भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का सर्वाधिक सुप्रसिद्ध, सुशालित सुसमृद्ध युग था। इस काल में जनमानस का उद्धार करने वाले ग्रन्थों की रचना हुई जो आज भी पाठकों में अत्यन्त लोकप्रिय है। तथा अपनी काव्य शैली तथा सजीविता के लिए विश्वप्रख्यात है।

भक्तिकाल में लिखित रचनाओं की श्रेष्ठता के आधार पर भक्तिकाल को हिन्दी का स्वर्णयुग कहा जाता है। इस काल में अनेक सिद्ध कवि हुए जिन्होंने ना केवल साहित्य के क्षेत्र में अपितु मानव कल्याण के क्षेत्र में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है।
भक्ति काल में कवियों काव्य रचना के लिए मुख्यतः भक्ति का आश्रय लिया तथा इनमें भी भक्ति की कुछ काव्यों में अवतारवाद मूर्तिपूजा आदि को महत्ता प्राप्त हुई

अतः भक्तिकालीन कवियों ने अपने काव्य में दो प्रकार की भक्ति का प्रयोग किया —

(i) सगुण भक्तिधारा।
(ii) निर्गुण भक्तिधारा

सगुण भक्तिधारा — सगुण भक्तिधारा के कवियों ने अपने काव्य [illegible] के साकार रूप की उपासना की। इस धारा के कवियों ने मूर्तिपूजा, अवतारवाद तथा व साकार भक्ति से 'प्रेरित' रचनाएं लिखी तथा अपने काव्य साधना से भगवान के साकार रूप की उपासना की। तथा अपने काव्य के माध्यम से साकार ब्रह्म के अलौकिक स्वरूप की जनमानस में स्थापना की

Do Not Write anything in this Portion

(ii) निर्गुण भक्तिधारा — इस भक्तिधारा के कवियों ने साकार ब्रह्म को ना अपनाकर निराकार ब्रह्म की उपासना की तथा अपने काव्य के माध्यम से निर्गुण स्वरूप के भगवान की साधना की उन्होंने बताया कि ब्रह्म का वास कण कण है तथा उनके प्रभाव सर्वव्यापी है।

ब्रह्म की उपासना करने के लिए उनके किसी स्वरूप की आवश्यकता नही होती उसके लिए मन से साधना की आवश्यकता होती है।

निर्गुण भक्ति धारा के प्रमुख कवि है— कबीर, जायसी, अमीर खुसरो, रैदास, नामदेव इत्यादि।

उत्तर सं० – 1 (E)

श्री वल्लभाचार्य ने अपने पास के स्वामी तथा अपने शिष्यों तथा उनके पुत्र के शिष्यों को मिलाकर अष्टसखा की स्थापना की जिसे अष्टछाप नाम दिया गया

वल्लभाचार्य कृष्णभक्ति धारा के प्रख्यात कवि है इन्होंने आजीवन श्री कृष्ण की भक्ति की है तथा उनके भक्ति से प्रभावित होकर अनेक कवि इनके शिष्य परम्परा में शामिल हो गये

वल्लभाचार्य के चार शिष्य तथा उनके पुत्र विट्ठलनाथ के चार शिष्यों को मिलाकर विट्ठलनाथ ने एक सम्प्रदाय बनाया जिसे अष्टछाप के नाम से जाना जाता है।

अष्टछाप काव्य धारा के कवियों ने श्री कृष्ण की भक्ति की है अपितु कृष्ण भक्ति काव्य धारा के ही सारे संत इसमें है।

ये सभी आजीवन कृष्ण भक्ति में लीन है तथा इनका दिनचर्या एक समान थी। ये सभी सुबह उठते मंदिर चले जाते तथा सायंकाल तक कृष्ण के भजन कीर्तन करते तथा यही करते अपना जीवन यापन कर दिया।

इन सब कवियों में वल्लभाचार्य के चार शिष्य निम्न है।

(i) कुम्भनदास (ii) सुरदास
(iii) परमानन्ददास (iv) कृष्णदास

श्री विट्ठलनाथ के चार शिष्य निम्न है।

(i) छीत स्वामी (ii) चतुर्भुजदास
(iii) नंददास (iv) गोविंद स्वामी

इन सब कवियों में कुम्भनदास उम्र में सबसे बड़े थे। तथा इन सबमें सुरदास सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रचलित रहे है।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर सं० - (f)

रीतिकाल में प्रमुखतः रीतिग्रंथों की रचनाएं ही हुई इस का समाज का हाल बेहाल था तथा इस काल के कवियों ने समाज पर बिलकुल ध्यान न देकर नारी पर सर्वाधिक ध्यान दिया है।
जिससे इस काल के कवि ने समाज के कल्याण के लिए शून्य मात्र भी कार्य नही किया। अपना सम्पूर्ण जीवन नारी-चित्रण में ही व्यतीत कर दिया।

रीतिकाल में प्रमुखतः लक्षण ग्रंथों की रचनाएं हुए तथा श्रृंगारिकता इस काल की प्रमुख प्रवृत्ति है। जो इस काल के काव्य में सर्वत्र व्याप्त है।

इस काल में रीति के अनुसार तथा काव्य रचना के आधार पर तीन प्रकार के कवि है।

1 रीतिसिद्ध कवि
रीतिमुक्त कवि
रीतिबद्ध कवि

बिहारी रीतिमुक्त काव्य धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि है उन्होंने अपने छन्द प्रयोग एवं अपनी भाषा शैली से काव्य में अनेक निखार किए है।

बिहारी ने अपने काव्य में अलंकारों का समुचित प्रयोग कर काव्य को अत्यन्त लोकप्रिय तथा

सूक्ष्म बना दिया है तथा इस काव्य का एक गूढ़ अर्थ मिला है।

बिहारी ने अपने काव्यों में अलंकारों का अत्यन्त प्रयोग किया है जिससे इनके दोहे दिखने में तो अत्यंत सूक्ष्म लगते हैं किन्तु इनका अर्थ अत्यंत गूढ़ होता है। इनके सम्बन्ध में दोहा प्रचलित है—

देखन मे छोटे लगें, घाव करें गम्भीर।

बिहारी की एक मात्र रचना बिहारी सतसई मिलती है जिसमें लगभग 713 दोहे हैं। इस पर काफी कई विद्वानों में मत भेद है।

उत्तर सं० - (G)

रीति काल में अत्यधिक रीतिग्रंथों की रचना मिलती है। तथा इस काल के कवियों ने प्रमुखत: नख शिख चित्रण, नारी चित्रण आदि की रचनाएं लिखी हैं तथा अपने काव्य में समाज का कल्याण बिल्कुल नहीं किया। इस काल की रचनाओं में मुख्यत: अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

श्रृंगारिकता इस काल की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। रीतिकाल में अलंकारों का बाहुल्य प्रयोग होता था किन्तु कुछ कवि ऐसे भी हैं जिन्होंने रीतिग्रंथों से हटकर तथा रीतिकालीन विशेषताओं को परे रखकर मुक्त शैली में रचनाएं लिखी हैं।

Do Not Write anything in this Portion

इस प्रकार के कवियों ने मुक्तक शैली में रचनाएं लिखीं और तथा अपने काव्य में नारी का स्थान प्रमुख रखा तथा भक्ति को प्रमुखता दी।

रीतिकाल में प्रमुखता तीन धाराएं थी

1. रीतिसिद्ध काव्य धारा
2. रीतिबद्ध काव्य धारा
3. रीतिमुक्त काव्य धारा

1. रीति सिद्ध काव्य धारा – रीतिसिद्ध काव्य धारा के प्रमुख कवि उनकी रचनाएं–

1. केशवदास – रामचन्द्रिका
2. मतिराम – ललित ललाम
3. भूषण – शिवराज भूषण

रीतिमुक्त काव्य धारा – रीतिमुक्त काव्य धारा के प्रमुख कवि व रचनाएं–

1. भिखारी दास – रस मंजरी
2. ग्वाल कवि – ललित [illegible]
3. बिहारी – बिहारी सतसई

रीतिबद्ध काव्य धारा – रीतिबद्ध काव्य धारा के प्रमुख कवि व रचनाएं –

घनानंद – सुजान चरित

बोधा – रूप मंजरी

Paper Code

11

उत्तर सं० 1 (H)

छायावाद का आगमन द्विवेदी युग के पश्चात माना जाता है डा० नगेन्द्र के अनुसार —

छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।

छायावाद में श्रृंगार रस प्रकृति चित्रण, किसान का चित्रण की अनेक रचनाए लिखी गई

छायावाद की तीन विशेषता निम्नलिखित है।

प्रकृति चित्रण — प्रकृति चित्रण छायावाद की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। छायावादी कवियों ने प्रकृति का अत्यन्त सजीव चित्रण किया है। जिसमें इन्होंने प्रकृति के सुन्दर स्वरूप व उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला है।
प्रकृति के कवियों में सुमित्रानन्दन का नाम अत्यन्त प्रचलित है। इन्हें कहा जाता है।

श्रृंगारिकता का चित्रण — छायावादी कवियों ने अपने काव्य में श्रृंगार को मुख्य व्याख्या स्थान तो नही दिया लेकिन इस युग के कवियों ने प्रेम से परिचित रचनाए कि तथा इसमें प्रेम के सही अर्थ को समझाया इस युग के कवियों ने प्रकृति में प्रेम मानव प्रेम तथा आत्म प्रेम की रचनाए भी लिखी है। इस युग के कवियो ने श्रृंगार रस की रचनाए लिखी है।
जयशंकर प्रसाद कृत कामायनी महाकाव्य मे प्रेम की पराकाष्ठा को छुआ है। तथा प्रेम के अर्थ सही अर्थों मे समझाया है।

Do Not Write anything in this Portion

किसान व मजदूर वर्ग का चित्रण —

छायावादी कवियों ने सिर्फ श्रृंगारिकता और कल्पनिकता पर ध्यान न देकर किसान वर्ग की समस्याओं को भी अपने काव्य में उजागर किया है। तथा इस वर्ग दैनिक अवस्थाओं तथा इनका जीवन के बारे में भी चित्रण किया है।

इस युग के कवियों ने काल्पनिकता को न अपनाकर यथार्थ का चित्रण किया है।

उत्तर सं०- 1(I)

• छायावाद तथा छायावादोत्तर युग के समय के बाद के समय को हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद के नाम से जाना जाता है।

इस काल में पुरानी धाराओं को छोड़कर नई धाराओं का विकास हुआ तथा कवियों ने रचना की नई पद्धति तथा शैली अपनाई।

इस युग के कवियों ने यथार्थ का चित्रण किया तथा काव्य में जन सामान्य की तकलीफों को आलोकित किया। इसकी विशेषताएं निम्न हैं।

नवीन चित्रण — इस युग के कवियों ने वर्षों से चली आ रही परम्परा का विरोध किया तथा उसमें नवीन चेतना का विकास किया। तथा काव्य में इनकी रचनाएं

पद्धतियों का विकास किया।

प्रकृति का चित्रण — इस युग के काव्य में पुराने काल से काफी अधिक प्रगति कर ली थी जिस काव्य की इति प्रगतिवाद नाम दिया गया। इस युग के कवियों ने नारी चित्रण न करके प्रकृति का चित्रण किया तथा इसकी सुन्दरता का उद्गार किया इस युग के काव्य में नई चेतना साफ झलकती है।

सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण इस युग के कवियों ने उस समय समाज में व्याप्त आर्थिकता तथा अराजकता का सजीव चित्रण किया तथा लोकमंगल के कार्य हेतु अपनी रचनाओं समाज का यथार्थ चित्रण किया जिससे काव्य में नई चेतना आयी तथा जन सामान्य को इस काल में अपने दिखायी।

खण्ड (ब)

उत्तर सं० (2)

इतिहास का नामकरण

हिन्दी साहित्य का इतिहास जितना व्यापक है उतना ही विवाद स्पद भी है। इस काल के काल विभाजन और नामकरण पर अत्यन्त विवाद चल रहा है क्योंकि कवियों ने अपने अपने मत प्रचलित किये हैं।

Paper Code

14

हिन्दी साहित्य का काल विभाजन अनेक कवियों ने अपने अनुसार किया तथा सबने अपने कालविभाजन को सही बताया किन्तु सबके कालविभाजन मे कुछ न कुछ कमियां अवश्य मिल रही थी

अतः इस बात पर विचार बना कि किस कालविभाजन को सही माना जाय

इस प्रकार हिन्दी साहित्य का काल विभाजन अनेक लेखकों द्वारा किया गया है तथा इनका नामकरण भी अलग अलग है।

डॉ. जार्ज ग्रियर्सन द्वारा नामकरण व कालविभाजन

~~प्रारम्भि~~ प्रारम्भिक काल (६४० ई०)
तुलसी का काव्य
जायसी
सूर
तुलसी के परवर्ती
आधुनिक
नई कविता

ग्रियर्सन का काल विभाजन व नामकरण साहित्य के काल का नामकरण न लगकर किसी अध्याय का नामकरण प्रतीत होते है। इसलिए इनके नामकरण आलोचना हुई

किन्तु कालविभाजन और नामकरण की शुरुआत थी।

Paper Code

15

४ मिश्रबंधुओं द्वारा नामकरण –

पूर्वप्रारम्भिक काल (700 – 1000 ई.)
आरम्भिक काल 1000 – 1375 ई.
मध्ययुगीन काव्य 1375 – 1700 ई.
पूर्वोत्तर मध्ययुगीन (1700 – 1900) ई.
आधुनिक युग 1900 से अब तक)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अत्यन्त कुशलता से काल विभाजन किए तथा कालो का नामकरण इस काल मे व्याप्त विशेषताओ की आधार पर किया इसलिए इनका काल विभाजन व नामकरण अत्यधिक मान्य है।

वीरगाथा काल 1000 ई. 1375 ई.
भक्ति काल 1375 ई. 1600 ई.
रीति काल 1600 ई. 1850 ई.
आधुनिक काल 1850 अब तक

रामकुमार हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा नामकरण –

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी आचार्य शुक्ल के मिलता जुलता नामकरण किया है किंतु इन्होंने आरंभिक काल को आदिकाल की संज्ञा दी है।

आदिकाल 1000 – 1375
भक्तिकाल 1375 – 1643
रीतिकाल 1643 – 1850
आधुनिककाल (1850 – अब तक)

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

डॉ॰ रामकुमार वर्मा के अनुसार नामकरण –

अन्य लेखकों के तुलना मे रामकुमार वर्मा ने अत्यंत सहज, सरल और सुव्यवस्थित नामकरण किया है।

(1) आदिकाल (1000 – 1375)

(2) भक्तिकाल (1375 – 1650)

(3) रीतिकाल (1650 – 1850)

(4) आधुनिक काल —— (1850 से अब तक)

(i) भारतेन्दु युग (1850 – 1900 ई॰)
(ii) द्विवेदी युग (1900 – 1920)
(iii) शुक्ल युग (1920 1936)
(iv) प्रगतिवाद (1936 —— 1943)
(v) प्रयोगवाद (1943 — अब तक ——

(a) नई कविता
(b) नई लेखन

अतः यह कहा जा सकता है कि आदिकाल का नामकरण अधिक विवाद स्पद रहा है। क्योंकि इस काल मे वीर रस की रचनाए भी हुई थी तथा अन्य विषयक रचनाए भी। किंतु रामचंद्र शुक्ल ने इस काल को वीर काव्य के

Do Not Write anything in this Portion

कारण वीरगाथा काल कहा है। तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आदि रचनाओं के कारण इसे आदिकाल की संज्ञा दी है।
किन्तु विद्वानों में आदिकाल अधिक मान्य है।

खण्ड – स

उत्तर सं० – (8)

जयशंकर प्रसाद

छायावाद के प्रमुख कवियों में जयशंकर प्रसाद का नाम अत्यन्त प्रचलित है। छायावाद का स्थान भारतीय हिन्दी साहित्य के कालविभाजन में द्विवेदी युग के बाद आता है।
इस काल में प्रकृति तथा प्रेम तथा सामाजिक तथा लौकिक तथा भक्ति सभी प्रकार की रचनाएं लिखी गयी।

इस काल के कवियों ने साहित्य के क्षेत्र में नया आलोक प्रज्वलित किया तथा हिन्दी साहित्य को अलग मुकाम पर ले गया।

इस के के प्रसिद्ध कवियों में जयशंकर प्रसाद अत्यन्त उल्लेखनीय है। इन्होंने अपने काव्य में भावात्मकता, मार्मिकता, विचारशीलता तथा सूक्ष्म अध्ययन किया है। इनकी शैली अत्यंत

Paper Code

18

विवेकपूर्ण तथा क्रियाशील है।

जयशंकर प्रसाद प्रमुखतः अपनी कृति 'कामायनी' के लिए विशेष प्रख्यात है ये इनकी सर्वश्रेष्ठ कृति है। तथा अत्यन्त लोक प्रचलित भी है।

जयशंकर प्रसाद की प्रमुख कृतियाँ— इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नवत है।

कहानी संग्रह — इन्द्रजाल, तितली, कंकाल

नाटक — (i) ध्रुवस्वामिनी (ii) अजातशत्रु (iii) चन्द्र गुप्त (iv) स्कंदगुप्त

उपन्यास — इरावती, आकाशदीप,

काव्य — (i) आँसू (ii) झरना (iii) लहर (iv) कामायनी

जयशंकर प्रसाद की काव्य शैली विवेचनात्मक थी तथा इन्होंने ... विस्तार से काव्य के अर्थ को पाठको को समझाया है।

जयशंकर प्रसाद शैली मे विवेचनात्मक तथा मार्मिक शैली का प्रयोग करते थे

Do Not Write anything in this Portion

जीवन वृत्त — इनका जन्म सुघनी साहू नामक परिवार में हुआ था। इनके पिता देवी प्रसाद एक व्यापारी थे। इनका जन्म स्थान काशी था। इसका परिवार अत्यन्त समृद्ध था तथा शाई की थे।

जयशंकर प्रसाद के कृतियों का वर्णन निम्नवत है।

जयशंकर प्रसाद के काव्य रचना कामायनी में इन्होंने अत्यन्त मार्मिक ढंग से काव्य रचना की है तथा अत्यन्त सहजता से काव्य को आलोकित किया।

कामायनी में 15 सर्ग हैं जिसके प्रत्येक सर्ग में काव्य शैली का [illegible] रूप देखने को मिलता है।

कामायनी काव्य की दृष्टि से महाकाव्य है।

प्रेम जयशंकर प्रसाद का काव्य वैशिष्ट्य—

प्रेम चित्रण — प्रसाद जी ने अपने काव्य कामायनी में नायक नायिका के अपूर्व प्रेम का चित्रण किया है इसके नायक नायिका श्रद्धा - मनु जो बिछड़ जाते हैं किन्तु अपने प्रेम की महत्ता के कारण पुनः मिलते हैं। इन्होंने प्रेम के सच्चे अर्थ को कामायनी में आलोकित किया है।

प्रकृति चित्रण - प्रसाद जी ने अपने काव्य में प्रकृति चित्रण को अत्यन्त सजीवता से किया है।
इनकी कविता आंसू में इन्होंने मन की व्यथा का चित्रण किया है तथा किस तरह प्रकृति की गोद में बैठने से मन की व्यथा दूर हो जाती है यह भी इस कविता में दर्शाया है।

प्रसाद जी ने प्रकृति को रोग निवारक एवं मन का हितैषी भी कहा है।

सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण - प्रसाद जी ने अपने नाटकों में युग में व्याप्त सामाजिक दशा का सजीव चित्रण किया है तथा अपने नाटक ध्रुवस्वामिनी में समाज में नारी के स्थान को चित्रित किया है तथा देश में व्याप्त युद्ध एवं अराजकता का चित्रण किया है।

नारी का चित्रण — प्रसाद जी ने अपने काव्य तथा नाटकों में नारी को अत्यन्त सम्मानीय स्थान दिया है तथा बताया है कि किस तरह नारी अत्यन्त शक्तिशाली एवं स्वनिर्भर है।

ध्रुवस्वामिनी की नायिका में प्रसाद जी ने उसे देवी का रूप बताते हुए कहा है कि

Do Not Write anything in this Portion

नारी अत्यन्त सम्मानीय व वंदनीय है।
तथा इसका सम्मान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रसाद जी ने इस नाटक मे बताया है कि कैसे नारी अपने स्वाभिमान को सर्वोपरि रखते हुए भी अपने प्रेमी का इन्तजार करती है तथा नारी का हृदय कितना विशाल तथा दृढ़ होता है।

शृंगारिकता का चित्रण - प्रसाद जी ने अपने कहानी संग्रह मे शृंगारिकता का चित्रण किया है, तथा यह भी दिखाया है कि प्रेम शाश्वत है तथा प्रेम से बड़ा कोई धर्म नही होता।

इनके रचनाओं में समाज मे व्याप्त बुराइयों का उन्मूलन साफ झलकता है। तथा इनके काव्य मे मार्मिकता तथा भावुकता का समन्वय देखने को मिलता है।

युद्धों का वर्णन - प्रसाद जी ने अपने नाटकों चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त आदि मे उस काल के संघर्ष को दर्शाया है तथा उस समय मे व्याप्त धन की लालसा तथा चापलूसता को दिखाया है तथा सजीव वर्णन किया।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

23

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion